शिक्षा

बाएं : *फ़े, लद्दाख में सेकमोल परिसर की इमारतें निष्क्रिय सौर वास्तुशिल्प के सिद्धांतों के आधार पर खड़ी की गई हैं। इन्हें कड़ाके की सर्दियों में भी अतिरिक्त ताप की आवश्यकता नहीं पड़ती। सौर ऊर्जा के इस्तेमाल की बदौलत यह परिसर विद्युत ग्रिड से स्वतंत्र है।*
दाहिने : *सेकमोल स्किल्स युनिवर्सिटी (कौशल विश्वविद्यालय) स्थानीय युवाओं को पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा और Rammed Earth Building का प्रशिक्षण देता है।*

मुख्यधारा की आधुनिक शिक्षा की विफलताओं को गिनवाने की कोई जरूरत नहीं है। यह शिक्षा दब्बूपन और अतिप्रतिस्पर्धा की संस्कृति को जन्म देती है और कॉरपोरेट मूल्यों से खुराक लेती है।

स्टुडेंट्स एजुकेशनल ऐण्ड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (सेकमोल) इस सोच और इन मूल्यों से परे है। यह संगठन एक व्यक्तिगत चयन और रचनाश. ीलता को सींचने वाली, स्थानीय स्तर पर उपयोगी प्रौद्योगिकी के सृजन में योगदान देने वाली, स्थानीय स्तर पर प्रासंगिक शैक्षिक सामग्री तैयार करने वाली और बौद्धिक व शारीरिक, दोनों प्रकार के श्रम को पर्याप्त सम्मान देने वाली सोच पर आधारित शिक्षा देता है। सेकमोल का काम अस्सी के दशक में शुरू हुआ था। यह मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था में लद्दाखी विद्यार्थियों के विफल होते जाने के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थी।

एक संगीतीय कार्यशाला में सेकमोल के विद्यार्थी।

आंध्र प्रदेश में डेक्कन डेवलेपमेंट सोसायटी द्वारा चलाए जा रहे पाचशाले (यानी धरती विद्यालय) की पाठ्यचर्या में बढ़ईगीरी, दर्ज़ीसाज़ी, बुक बाइंडिंग, परमाकल्चर और पॉटरी का व्यावहारिक कौशल एक अहम हिस्सा है। इसके अलावा यहां भाषा, विज्ञान और गणित जैसे प्रचलित विषयों की शिक्षा तो दी ही जाती है।

पाचाशाले के विद्यार्थी किताबों का ज्ञान और हाथ के काम, दोनों सीखते हैं।

बाएं: *भिताड़ा, मध्य प्रदेश में एक जीवनशाला स्कूल।*
दाएं: *मणिबेली, महाराष्ट्र में बच्चे एक जीवनशाला में कठपुतलियों से खेल रहे हैं।*

नर्मदा घाटी में नर्मदा बचाओ आंदोलन द्वारा चलाए जा रहे जीवनशाला स्कूल जबरिया विस्थ. ापन के खिलाफ स्थानीय समुदायों के संघर्ष से पैदा हुए थे। जनजातीय जीवन के ज्ञान और प्रतिष्ठा पर आधारित शिक्षा के जरिए ये स्कूल बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने में भी मदद देते हैं और उन्हें उस वृहत्तर राजनीतिक व्यवस्था के प्रति अवगत भी कराते हैं जिसका वे हिस्सा हैं।